पाठ - कर चले हम फ़िदा

व्याख्या

(1) कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों
साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते क़दम को न रुकने दिया
कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया
मरते-मरते रहा बाँकपन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

भावार्थ - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'कैफ़ी आज़मी' साहब के द्वारा रचित गीत 'कर चले हम फ़िदा' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि स्वयं को भारत माता के एक बलिदानी सिपाही के रूप में स्थापित करते हुए और देश के नौजवानों से उम्मीद भरा आह्वान करते हुए कहते हैं कि हमने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया है। दुश्मनों का बहादुरी से सामना करते हुए सीने पर गोलियां खाई है। अब हम जा रहे हैं, देश की रक्षा, आन-बान-शान अब तुम्हारे कंधों पर है। युद्ध में दुश्मनों का सामना करते हुए बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। हमारी साँसें थम रही थीं, अत्यधिक ठंड के कारण नसें जम रही थीं, फिर भी कभी हमने अपने कदम पीछे नहीं हटाया। आखिरी साँस तक चट्टान की तरह डटे रहे और अपने कदम आगे बढ़ाते रहे। आगे कवि कहते हैं कि यदि हमारे सर कट गए या फिर हम अपने वतन की ख़ातिर शहीद हो गए, तो हमें इसके लिए कोई गम नहीं है। बल्कि हमें गर्व और खुशी है कि हमने अपने जीते जी हिमालय का सर कभी झुकने न दिया।

कवि वीरों की शहादत पर गर्वित होकर, उनके एहसास को बयाँ करते हुए तथा देश के नौजवानों से उम्मीद भरा आह्वान करते हुए कहते हैं कि मरते दम तक हमने कभी हार नहीं मानी। अंतिम साँस तक दुश्मनों से लोहा लिया है। अंतिम क्षणों तक बलिदान देने का जज्बा ज़िंदा रहा हमारे अंदर। लेकिन अब हम अपना बलिदान देकर जाकर रहे हैं। इस उम्मीद से कि तुम अब देश के कर्णधार बनोगे। अब देश की रक्षा तुम्हारे कंधों पर है।

(2) ज़िंदा रहने के मौसम बहुत हैं मगर
जान देने के रुत रोज़ आती नहीं
हुस्न और इश्क दोनों को रुस्वा करे
वह जवानी जो खूँ में नहाती नहीं
आज धरती बनी है दुलहन साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

भावार्थ - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'कैफ़ी आज़मी' साहब के द्वारा रचित गीत 'कर चले हम फ़िदा' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि स्वयं को भारत माता के एक बलिदानी सिपाही के रूप में स्थापित करते हुए और देश के नौजवानों से उम्मीद भरा आह्वान करते हुए कहते हैं कि हमें जिन्दा रहने के लिए बहुत वक़्त और मौके मिलते रहते हैं। परन्तु, मातृभूमि के लिए अपना बलिदान देने का अवसर कभी-कभी ही मिलता है। कवि के अनुसार, जो जवानी लहू से नहाती नहीं, वही हुस्न और इश्क़ को रुसवा करती है। आगे कवि कैफ़ी आज़मी साहब कहते हैं कि आज धरती बिल्कुल दुल्हन की तरह सजी-धजी है। यह हमारे शौर्य की गाथा गा रही है। इसकी रक्षा के लिए हमें तत्पर रहना चाहिए। यह हमारा कर्तव्य है। कवि हम सबसे आह्वान करते हुए कहते हैं कि अब हम अपना बलिदान देकर जाकर रहे हैं। इस उम्मीद से कि तुम अब देश के कर्णधार बनोगे। अब देश की रक्षा तुम्हारे कंधों पर है।

(3) राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है
ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले
बांध लो अपने सर पे कफ़न साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

भावार्थ - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'कैफ़ी आज़मी' साहब के द्वारा रचित गीत 'कर चले हम फ़िदा' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि स्वयं को भारत माता के एक बलिदानी सिपाही के रूप में स्थापित करते हुए और देश के नौजवानों से उम्मीद भरा आह्वान करते हुए कहते हैं कि ये जो शहादत का क्रम है, यह कभी थम न पाए। अर्थात् आगे बढ़ते हुए दुश्मनों का बेख़ौफ सामना करो, सीने पर गोलियां खाना मंजूर हो, पर रणभूमि में पीठ दिखाना कायरता है। कवि कहते हैं कि इन शहादतों के बाद ही हमें जीत का जश्न मनाने के अवसर मिलता है। कवि के अनुसार, हम शहीद हो रहे हैं, मगर हमारी ज़िंदगी मौत से गले मिल रही है, हमें इस भाव को समझना होगा।

कवि वीरों की शहादत पर गर्वित होकर, उनके एहसास को बयाँ करते हुए तथा देश के नौजवानों से उम्मीद भरा आह्वान करते हुए कहते हैं कि अब तुम भी अपने सर पर कफ़न बाँध लो। शहादत के जश्न में सराबोर होने के लिए तैयार हो जाओ। कवि हम सबसे आह्वान करते हुए कहते हैं कि अब हम अपना बलिदान देकर जाकर रहे हैं। इस उम्मीद से कि तुम अब देश के कर्णधार बनोगे। अब देश की रक्षा तुम्हारे कंधों पर है।

(4) खींच दो अपने खूँ से ज़मी पर लकीर
इस तरफ़ आने पाए न रावण कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे
छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों।

भावार्थ - प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि 'कैफ़ी आज़मी' साहब के द्वारा रचित गीत 'कर चले हम फ़िदा' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि स्वयं को भारत माता के एक बलिदानी सिपाही के रूप में स्थापित करते हुए और देश के नौजवानों से उम्मीद भरा आह्वान करते हुए कहते हैं कि अपने खून से ज़मीन पर लकीर खींच दो अर्थात् एक ऐसा सरहद बना दो कि उस पार से नापाक इरादा रखने वाला कोई रावण इस पार न आ सके। कवि कैफ़ी साहब भारत माता को सीता समान बताते हुए कहते हैं कि यदि कोई भी हाथ भारत माँ की आँचल छूने की हिम्मत करे तो उसे तोड़ दो। आगे कवि कैफ़ी साहब भारत के वीर सपूतों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि भारत माँ के लिए राम और लक्ष्मण दोनों तुम ही हो। भारत माँ का लाज की रक्षा अब तुम्हारे हाथ में है। कवि हम सबसे आह्वान करते हुए कहते हैं कि अब हम अपना बलिदान देकर जाकर रहे हैं। इस उम्मीद से कि तुम अब देश के कर्णधार बनोगे। अब देश की रक्षा तुम्हारे कंधों पर है।

पाठ्य पुस्तक प्रश्न

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1. क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है?

उत्तर: हाँ, इस युद्ध की पृष्ठभूमि भारत-चीन युद्ध पर आधारित है। देश को आजादी मिलने के कुछ ही समय बाद भारत को कमज़ोर जानकर 1962 में चीन ने भारत पर हमला कर दिया। इस युद्ध में भारतीय वीरों ने अपना बलिदान देकर देश की रक्षा की। युद्ध की इस

पृष्ठभूमि को आधार बनाकर फ़िल्मकार चेतन आनंद ने 'हकीकत' नाम से फ़िल्म बनाई जो भारत-चीन के युद्ध को वास्तविक स्थिति को दर्शकों के सामने लाती है। चेतन आनंद ने इस युद्ध को पर्दे पर जीवंत रूप में प्रस्तुत किया था।

प्रश्न 2. 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया'-इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?
उत्तर: इस पंक्ति में हिमालय भारत के मान-सम्मान एवं अस्मिता का प्रतीक है। भारत-चीन युद्ध हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों पर ही लड़ा गया था। भारतीय सैनिक शीश कटवा देते हैं, हँसते-हँसते अपने प्राणों का बलिदान दे देते हैं, लेकिन हिमालय का सिर झुकने नहीं देते अर्थात् वे भारत-भूमि के मान-सम्मान की रक्षा करते हैं। उनके साहस की अमर गाथा से हिमालय की पहाड़ियाँ आज भी गुंजायमान हैं।

प्रश्न 3. इस गीत में धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है?
उत्तर: भारत भूमि अत्यंत सुंदर है। पेड़-पौधे, नदी, पहाड़, झरने तथा चारों ओर बिखरी हरियाली इसकी सुंदरता में वृद्धि करते हैं। अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए भारतीय सैनिकों ने जो रक्त बहाया था वह भारत भूमि रूपी दुलहन के माथे पर लाल टीका जैसा प्रतीत हो रहा था। रक्त-रंजित युद्ध भूमि भारत भूमि रूपी दुलहन के टीके-सी सुशोभित हो रही थी। नवविवाहिता के माथे पर भी लाल रंग का टीका सुशोभित होता है। इसी समानता के कारण भारत माता को दुलहन कहा गया है।

प्रश्न 4. गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि वे जीवनभर याद रह जाते हैं?
उत्तर: गीत अपनी विशेषताओं की पूँजी के कारण जीवनभर याद रह जाते हैं। ये विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. गीत के मार्मिक तथा प्रभावशाली बोल।
2. सजीव तथा अमिट प्रभाव छोड़ने वाली शैली।
3. मीठे सुर।
4. लय-ताल।
5. गीत का जीवन के साथ संबंध जोड़ना।

प्रश्न 5. कवि ने साथियों' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?
उत्तर: कवि ने 'साथियों' का संबोधन युद्ध में घायल और मृत्यु की ओर कदम बढ़ा चुके सैनिकों के मुँह से युद्धरत साथी सैनिकों के लिए करवाया है। इसके अलावा इस शब्द का प्रयोग सैनिकों के लिए न होकर प्रत्येक देशवासियों के लिए है। जिस पर उसकी अपनी मातृभूमि को शत्रुओं से बचाने का दायित्व है। 'साथियों' का संबोधन देश-प्रेम और देशभक्ति को जगाने के लिए किया गया है ताकि देश को एक बार फिर से गुलाम होने से बचाया जा सके।

प्रश्न 6. कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?
उत्तर: कवि ने इस कविता में देशभक्तों, देशप्रेमियों, सैनिकों, युवाओं अर्थात् देशवासियों रूपी काफ़िले को देश के लिए हर समय अपना सर्वस्व कुर्बान कर देने के लिए तैयार रहने को अर्थात् आगे बढ़ते रहने की बात कही है, क्योंकि कुर्बानियों की राहें सुनसान नहीं रहनी चाहिए। बलिदान का रास्ता तो सदैव प्रगतिशील रहना चाहिए। कुर्बानियों के काफ़िले ही देश को अमरता प्रदान करते हैं।

प्रश्न 7. इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है?
उत्तर: इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' उस कदम की ओर संकेत करता है, जिसे देश की रक्षा करने के लिए अपनी जान की परवाह न करने वाले सैनिक उठाते हैं। ये सैनिक देश के मान-सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों का मोह किए बिना शत्रुओं से मुकाबला करने के लिए तैयार रहते हैं। यह सैनिकों द्वारा शत्रुओं से निडरता पूर्वक मुकाबला करने की ओर संकेत करता है।

प्रश्न 8. इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: प्रस्तुत कविता 'कर चले हम फ़िदा' उर्दू के प्रगतिशील तथा अति लोकप्रिय कवि कैफ़ी आज़मी द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने उन सैनिकों के हृदय की आवाज़ को व्यक्त किया है, जिन्हें अपने देश के प्रति किए गए हर कार्य, हर कदम, हर बलिदान पर गर्व है इसलिए उन्हें प्रत्येक देशवासी से कुछ आशाएँ हैं, अपेक्षाएँ हैं कि उनके इस संसार से विदा हो जाने के बाद वे देश की आन, मान, शान पर आँच नहीं आने देंगे, बल्कि समय आने पर अपना बलिदान देकर भी देश की रक्षा करेंगे। यही इस कविता का प्रतिपाद्य है।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.

साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उत्तर: भाव यह है कि युद्ध में सैनिकों का मुकाबला करते हुए सैनिक अपनी अंतिम इच्छा प्रकट करते हुए कह रहे हैं कि सैनिकों एवं देशवासियो! तुम अपने बलिदान से ऐसी लकीर खींच दो जिसे पार करके कोई शत्रु रूपी रावण इस ओर कदम रखने का साहस न कर सके और देश को ऐसी स्थिति का सामना न करना पड़े।

प्रश्न 2.

खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर
इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई

उत्तर: कवि सैनिकों से कहता है कि जिस प्रकार वनवास के समय लक्ष्मण ने सीता जी की रक्षा के लिए ज़मीन पर लक्ष्मण रेखा (रक्षा हेतु) खींची थी, उसी प्रकार तुम भी अपने खून से लकीर खींचो ताकि देश के अंदर कोई रावण रूपी दस्यु प्रवेश न कर सके। इस वतन की रक्षा का भार अब तुम्हारे पर है।

प्रश्न 3.

छू न पाए सीता का दामन कोई
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियो।

उत्तर: इस अंश का भाव है कि वीरों, सैनिकों, देशभक्तों तथा क्रांतिकारियों के होते हुए सीमा पार से कोई रावण या आक्रमणकारी या दस्यु या आतंकवादी देश में प्रवेश करके देश की अस्मिता को नहीं लूट सकती। अर्थात् राम और लक्ष्मण जैसे अलौकिक वीरों की धरती पर आकर कोई भी दुष्ट भारत माता का दामन नहीं छू सकता।"

भाषा अध्ययन

प्रश्न 1. इस गीत में कुछ विशिष्ट प्रयोग हुए हैं। गीत के संदर्भ में उनका आशय स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

उत्तर:

गीत में विशिष्ट प्रयोग	आशय (अर्थ)	वाक्य में प्रयोग
कट गए सर।	जान चली गई।	भारतीय वीर सैनिकों के देश रक्षा में सर कट गए।
नब्ज़ जमती गई	मौत के समीप होते जाना।	युद्धभूमि में नब्ज़ जमते जाने पर भी वीरों के कदम आगे बढ़ते गए।
जान देने की रुत	बलिदान का अवसर।	जान देने की रुत हमेशा नहीं आती।
हाथ उठने लगे	अत्याचार करना।	जो कोई हमारी मातृभूमि पर हाथ उठाने की कोशिश करेगा, तो हम उसे धूल में मिला देंगे।

योग्यता विस्तार

प्रश्न 1. कैफ़ी आज़मी उर्दू भाषा के एक प्रसिद्ध कवि और शायर थे। ये पहले गज़ल लिखते थे। बाद में फिल्मों में गीतकार और कहानीकार के रूप में लिखने लगे। निर्माता चेतन आनंद की फिल्म 'हकीकत' के लिए इन्होंने यह गीत लिखा था, जिसे बहुत प्रसिद्धि मिली। यदि संभव हो सके तो यह फिल्म देखिए।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

फिल्म - https://youtu.be/zv2WXjYmPI0?si=G6xMlwrxNQSManYd

गाना - https://youtu.be/QnJyY9xIa9c?si=9qLtN0NbnmbH_9nJ

प्रश्न 2. 'फिल्म का समाज पर प्रभाव' विषय पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

परिचर्चा विषय:

"चेतन आनंद की फिल्म 'हकीकत' का समाज पर प्रभाव"

पात्र:

1. **अध्यक्ष (वक्ता 1)** – परिचर्चा का संचालन करता है
2. **राघव (वक्ता 2)** – फ़िल्म के ऐतिहासिक संदर्भ को बताता है
3. **स्मिता (वक्ता 3)** – फ़िल्म की भावनात्मक गहराई पर बोलती है
4. **अर्जुन (वक्ता 4)** – समाज पर असर और देशभक्ति का संदेश
5. **नेहा (वक्ता 5)** – संगीत और संवाद का प्रभाव
6. **संचालक (वक्ता 6)** – समापन और निष्कर्ष

संवाद प्रारूप:

अध्यक्ष (वक्ता 1):

नमस्कार साथियों, आज की हमारी कक्षा परिचर्चा का विषय है – *"चेतन आनंद की फिल्म 'हकीकत' का समाज पर प्रभाव"*। यह फिल्म 1962 के भारत-चीन युद्ध पर आधारित है और आज भी एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ मानी जाती है। आइए, राघव हमें इसका ऐतिहासिक पक्ष समझाएं।

राघव (वक्ता 2):

धन्यवाद। 'हकीकत' फिल्म 1964 में आई, जब भारत 1962 के युद्ध के ज़ख्मों से उबर रहा था। यह फ़िल्म लद्दाख की पृष्ठभूमि में बनी और सच्ची घटनाओं से प्रेरित थी। इसने भारतीय सैनिकों के बलिदान को सामने रखा और राष्ट्र को झकझोर दिया।

स्मिता (वक्ता 3):

बिलकुल सही राघव! इस फ़िल्म ने सिर्फ़ युद्ध नहीं दिखाया, बल्कि एक सैनिक की पीड़ा, तड़प और प्रेम को भी दर्शाया। बलराज साहनी और धर्मेंद्र जैसे कलाकारों ने देशभक्ति को इतना सजीव किया कि दर्शक भावुक हो उठे। लोगों ने सिनेमा हॉल में खड़े होकर सलाम किया।

egyanarchive

अर्जुन (वक्ता 4):
इस फ़िल्म का सबसे बड़ा प्रभाव ये था कि इसने हर नागरिक के दिल में देशभक्ति की चिंगारी जलाई। उस दौर में जब देश हताश था, इस फिल्म ने हमें फिर से एकजुट किया। सैनिकों के प्रति सम्मान और संवेदना की भावना को बढ़ावा मिला।

नेहा (वक्ता 5):
और फिल्म के गीतों को भला कोई कैसे भूल सकता है! "कर चले हम फ़िदा जान-ओ-तन साथियों…" सुनते ही आंखें नम हो जाती हैं। ये गीत आज भी स्कूलों में गाए जाते हैं और देशप्रेम की भावना को गहराई से जगाते हैं।

संचालक (वक्ता 6):
तो स्पष्ट है कि चेतन आनंद की *'हकीकत'* केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि भारतीय समाज के लिए एक भावनात्मक और प्रेरणादायक दस्तावेज़ थी। यह आज भी हमें हमारे सैनिकों के बलिदान की याद दिलाती है। आइए हम सब भी वादा करें कि देशप्रेम को हमेशा दिल में जिंदा रखेंगे।

समापन पंक्ति (सभी):
"जय हिन्द!"

प्रश्न 3. कैफ़ी आज़मी की अन्य रचनाओं को पुस्तकालय से प्राप्त कर पढ़िए और कक्षा में सुनाइए। इसके साथ ही उर्दू भाषा के अन्य कवियों की रचनाओं को भी पढ़िए।
उत्तर:
छात्र स्वयं करें।

कैफ़ी आज़मी की प्रमुख रचनाएँ:

1. **औरत**
   ➤ नारी स्वतंत्रता और अधिकारों पर आधारित एक क्रांतिकारी कविता।
2. **आवारा सज़दों का सिलसिला**
   ➤ गहरी आध्यात्मिकता और आत्मचिंतन से भरी रचना।
3. **बहूरूपिणी**
   ➤ स्त्री की विविध भूमिकाओं और संघर्षों पर केन्द्रित।
4. **मैं तन्हा खड़ा हूँ**
   ➤ आत्मसंघर्ष और सामाजिक असमानताओं का चित्रण।
5. **दूसरा बनवास**
   ➤ समकालीन सामाजिक समस्याओं पर कटाक्ष।
6. **मकान**
   ➤ आम आदमी की गरीबी और संघर्ष को मार्मिक रूप में प्रस्तुत करती है।
7. **किताबें झांकती हैं बंद अलमारी के शीशों से**
   ➤ शिक्षा और पुस्तकों के महत्व पर भावपूर्ण अभिव्यक्ति।

उर्दू के अन्य प्रसिद्ध कवि और उनकी रचनाएँ:

1. **साहिर लुधियानवी**
    - ताज महल
    - ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है
    - मैं पल दो पल का शायर हूँ
2. **फ़ैज़ अहमद फ़ैज़**
    - मुझसे पहली सी मोहब्बत
    - गुलों में रंग भरे
    - हम देखेंगे (क्रांतिकारी कविता)
3. **मजाज़ लखनवी**
    - आवारा
    - कूचा-ए-जानाँ
    - नज़्में
4. **जोश मलीहाबादी**
    - हरफ-ए-आख़िर
    - शोला व सहर
    - सुनहरे सपने
5. **अल्ताफ़ हुसैन हाली**
    - मुसद्दस-ए-हाली
    - हयात-ए-सादी
    - शिकायत-ए-जिंदगी

प्रश्न 4. एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा कैफ़ी आज़मी पर बनाई गई फिल्म देखने का प्रयास कीजिए।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

कैफ़ी आज़मी पर बनाई गई फिल्म - https://youtu.be/eVWU38TP9Mg?si=Cmr05xy-V98lIWD9

परियोजना कार्य

प्रश्न 1. सैनिक जीवन की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए एक निबंध लिखिए। सैनिक जीवन की चुनौतियाँ।

उत्तर: सैनिक अपने अदम्य साहस व शक्ति से देश की रक्षा के लिए प्राकृतिक व मानव-जनित अनेक चुनौतियों (आपत्तियों) का सामना करते हैं। वे भीषण गर्मी, सर्दी, वर्षा अथवा किसी प्रकार की प्राकृतिक आपदा में अपने को अडिग रखकर देश-रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं। दुश्मन अपनी विजय के लिए हर संभव तरीके से सैनिकों को परास्त करना चाहता है, लेकिन सैनिक दुश्मन की हर चाल को काटते हैं। दुश्मन-देश अपनी सामरिक क्षमता का उपयोग कर उन्हें हराना चाहता है, लेकिन उसके किसी भी प्रकार के व्यूह को सैनिक अपने जीवन की परवाह किए बिना असफल करते हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सैनिक अपने प्रशिक्षण काल से लेकर देश सेवा के आखिरी दिन तक चुनौतियों का मुकाबला करते हैं। सच तो यह है कि चुनौतियों का मुकाबला करने का दूसरा नाम सैनिक है। सैनिकों की अनेक चुनौतियों में सबसे बड़ी चुनौती यह भी है कि वे अपने बच्चों, घर-परिवार, संबंधी आदि सबसे दूर रहकर योगी जैसा जीवन जीते हैं। हम इन सैनिकों को सलाम करते हैं।

egyanarchive

प्रश्न 2. आज़ाद होने के बाद सबसे मुश्किल काम है आज़ादी बनाए रखना। इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर:

छात्र स्वयं करें।

विषय:

"आज़ाद होने के बाद सबसे मुश्किल काम है आज़ादी बनाए रखना"

भूमिका परिचय (संचालक द्वारा):

नमस्कार साथियों!

आज की हमारी कक्षा चर्चा का विषय है — *"आज़ाद होने के बाद सबसे मुश्किल काम है आज़ादी बनाए रखना।"*

हम सब जानते हैं कि भारत ने 15 अगस्त 1947 को आज़ादी पाई, परंतु क्या यह पर्याप्त था? क्या सिर्फ़ स्वतंत्र होना ही सब कुछ है? आइए, इस पर विचार करें।

पात्र और उनकी भूमिकाएँ:

1. **संचालक (वक्ता 1)** – परिचय और समापन
2. **रचना (वक्ता 2)** – ऐतिहासिक दृष्टिकोण
3. **अद्वैत (वक्ता 3)** – नागरिक जिम्मेदारियाँ
4. **सपना (वक्ता 4)** – भ्रष्टाचार, आतंकवाद और आंतरिक चुनौतियाँ
5. **तुषार (वक्ता 5)** – शिक्षा और सामाजिक समानता की भूमिका
6. **नेहा (वक्ता 6)** – निष्कर्ष और संदेश

संवाद उदाहरण:

संचालक: आज़ादी पाना जितना कठिन था, उतना ही कठिन उसे बनाए रखना है। आइए, रचना से सुनते हैं कि इतिहास इस बारे में क्या कहता है।

रचना: भारत ने अंग्रेजों से लंबा संघर्ष करके स्वतंत्रता पाई। लेकिन आज़ादी के बाद हमें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा— विभाजन, दंगे, शरणार्थी समस्या और नई शासन-व्यवस्था की नींव।

गांधी जी ने कहा था, "स्वतंत्रता की रक्षा करना, उसे प्राप्त करने से अधिक कठिन होता है।"

अद्वैत: सही कहा! आज़ादी बनाए रखने के लिए हमें *सजग नागरिक* बनना होगा। हमें अपने कर्तव्यों को निभाना होगा — जैसे मतदान करना, कानून का पालन करना, और देश की संपत्ति की रक्षा करना।

अगर हम लापरवाह होंगे, तो आज़ादी सिर्फ़ नाम की रह जाएगी।

सपना: पर आज़ादी के सामने बड़ी बाधाएँ भी हैं — *भ्रष्टाचार, आतंकवाद, सांप्रदायिकता,* और *डिजिटल अपराध* जैसे खतरे। यदि हम इनसे निपटने में असफल होते हैं, तो हमारे पूर्वजों का बलिदान व्यर्थ हो जाएगा।

तुषार: हमारे देश में आज भी बहुत से लोग शिक्षा से वंचित हैं। जब तक हर नागरिक शिक्षित और जागरूक नहीं होगा, तब तक आज़ादी अधूरी है। *सामाजिक समानता* और *नारी सुरक्षा* जैसे मुद्दे भी उतने ही ज़रूरी हैं।

नेहा: तो साथियों, हमें न केवल अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना है, बल्कि अपने *कर्तव्यों* को भी पूरी ईमानदारी से निभाना है। तभी हमारी आज़ादी *सच्चे अर्थों* में सुरक्षित रह पाएगी।

समापन (सभी साथ):
"आज़ादी की रक्षा हम सबकी ज़िम्मेदारी है!"

प्रश्न 3. अपने स्कूल से किसी समारोह पर यह गीत या अन्य कोई देशभक्तिपूर्ण गीत गाकर सुनाइए।
उत्तर:
छात्र स्वयं करें।
प्रसिद्ध देशभक्ति गीत (हिंदी में):
1. **कर चले हम फ़िदा (फ़िल्म – हकीकत)**
गीतकार: कैफ़ी आज़मी

🎶 *"कर चले हम फ़िदा जान-ओ-तन साथियों, अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों..."*

👉 भावनात्मक और प्रेरणादायक, सैनिकों के बलिदान पर आधारित।

2. **ऐ मेरे वतन के लोगों**
गायिका: लता मंगेशकर
गीतकार: प्रदीप

🎶 *"ऐ मेरे वतन के लोगों, ज़रा आँख में भर लो पानी..."*

👉 1962 के युद्ध के बाद का प्रसिद्ध गीत; आज भी रुला देता है।

3. **वंदे मातरम् (बैंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय)**

🎶 *"वन्दे मातरम्, सुजलां सुफलां..."*

👉 भारत माता की वंदना में सबसे लोकप्रिय गीत।

4. **सारे जहाँ से अच्छा (डॉ. इक़बाल)**

🎶 *"सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्ताँ हमारा..."*

👉 गाने में सरल, कक्षा प्रस्तुति के लिए उपयुक्त।

5. **हम लाए हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के (फ़िल्म – कर्मा)**

🎶 *"हम लाए हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के..."*

👉 युवा जोश और स्वतंत्रता का उत्सव।

egyanarchive

6. दिल दिया है जान भी देंगे (फ़िल्म – कर्मा)

🎶 *"दिल दिया है, जान भी देंगे, ऐ वतन तेरे लिए..."*

👉 भावनात्मक देशभक्ति गीत।

यदि आप इन्हें यूट्यूब पर सुनना चाहें:

- कर चले हम फ़िदा – हकीकत (YouTube लिंक)
- ऐ मेरे वतन के लोगों – लता मंगेशकर (YouTube)
- वन्दे मातरम् (Classical Style)
- सारे जहाँ से अच्छा – School Chorus Version

egyanarchive